v/;k; & r`rh;

lEcf/kr lkfgR; dk ijkoyksdu

संबंधित साहित्य का पुरावलोकन शोध तथा शोधकर्ता को गति प्रदान करता है।

शोध के विषय का चुनाव कर लेने के पूर्व एवं पश्चात् यह आवश्यक है, कि हम उस विषय से सम्बद्ध अन्य शोधकर्ताओं के विचारों, निष्कर्षों तथा पद्धतियों से परिचित हो।

शोध का पुनरावलोकन शोधकर्ता को शोध कार्य के ऐसे क्षेत्रों की समस्याओं को प्रथक करता है, जो उसके शोध कार्य में लाभदायक नहीं है, तथा वह ऐसे क्षेत्रों को चुनता है, जो उसके शोधकार्य के ज्ञान में वृद्धि करते हैं।

संबंधित साहित्य का तात्पर्य अनुसंधान समस्या से संबंधित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञानकोशो, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध प्रश्नों एवं अभिलेखों आदि से है।

प्रस्तुत साहित्य का पुनरावलोकन करने से शोध साहित्य के अध्ययन के विषय से संबंधित प्रारंभिक अवधारणाओं का ज्ञान प्राप्त होता है, तथा अध्ययन की दिशा निर्धारण करने में मद्द मिलती है। जिससे शोधार्थी शोध से संबंधित उपकल्पनाओं, उपकरणों, सांख्यिकी विधि का ज्ञान प्राप्त कर एवं उसका शोध कार्य में प्रयोग कर निष्कर्ष ज्ञात कर सके।

साथ ही शोधार्थी शोध से संबंधित पहले किये गये, अनेक शोधकर्ताओं विद्वानों, शिक्षा शास्त्रियों, समाज शास्त्रियों के निष्कर्षो का ज्ञात प्रदान कराता है।

शोधार्थी का शोधकार्य का विषय ''महिलाओं के परिधान में रंग चयन को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन है। इस कारण शोधार्थी ने अपने विषय से संबंधित साहित्य को पुनरावलोकन का चयन किया है जो अग्रलिखित है।

प्रत्येक मनुष्य अपने जीवनकाल में विकास की समस्त अवस्थाओं से हाकर गुजरता है। प्रत्येक अवस्था के कुछ विकासात्मक कार्य होते हैं। यदि बालक अपने उस विकासात्मक अवस्था के कार्यो को करने में सफल होता है तो वह सफलता पूर्वक दूसरी अवस्था में प्रवेश करता है इससे उसे संतुष्टि तथा प्रसन्नता प्राप्त होती है।

प्रत्येक अवस्था को अपनी कुछ विशेषतायें होती है तथा यही विशेषतायें बालक की रूचि, ध्यान, सृजनशीलता तथा व्यवहार में प्रगट होती है एवं उसकी पसंद ना पसंद तथा प्राथमिकता निर्धारित करती है। इन्हीं के अनुसार विभिन्न अवस्थाओं में व्यक्ति अपनी एक प्राचीनकतायें भी निश्चित करताहै जो अवस्था परिवर्तन के साथ बदलती रहती है। शोधार्थी ने अपने शोध का केन्द्र रंगों के विन्यास को बनाया है तथा अपने अध्ययन में बाल्यावस्था, किशोरावस्था तथा प्रौढ़ावस्था को सम्मलित किया है। प्राप्त निष्कर्ष यह स्पष्ट करते हैं कि व्यक्ति की विभिन्न अवस्थायें उसकी रंग प्राथमिकता में भी अंतर बताती है।

Clement, - J.P.; Marchan, -F; Boyon, -D; Legar, J.M. (2000) के द्वारा चमकीले रंग तथा रूपान्तरण रंग परीक्षण के द्वारा चिंता का स्तर जानने का प्रयास किया गया, इस हेतु 34 मेल तथा फीमेल जिनकी आयु 76.1 औसतन थी, और जो डिमेनटिया के शिकार थे, लिये गये तथा 34 मेल, फील नियंत्रित समूह हेतु सामान्य वर्ग में से चयनित किये गये, शोध निर्णय यह बताते हैं, कि इन दोनों रंग परीक्षणों का प्रयोगात्मक तथा नियंत्रित समूह का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। नियंत्रित समूह की अपेक्षा प्रयोगात्मक मूह में चिन्ता का स्तर उच्च तथा नियंत्रित समूह का स्तर निम्न पाया गया।

Desbiens, - Jocelyne; Bosse, (2000) ने रंग वरीयता एवं व्यक्तिगत शील गुणों के बीच सहसम्बन्ध को जानने के लिये हुए अध्ययनों में सोसियोडिमोग्रेफिक वेरीयेवल्स से संबंधित प्रदत्य एवं व्यक्तित्वशील गुणों एवं मनोविकृति लक्षणों को लेते हुए, रोसा स्हायी धब्बों पर परीक्षण कर रंग कारकों की वारम्बराता को देखा पर उनके परिणामों से रंग कारकों का सम्बन्ध नियंत्रित समूह एवं मनोविकृति व्यक्तियों में किसी प्रकार का अंतर दृष्टिगत नहीं हुआ।

Davis, - Katheryn-B; Daniels,- Maurice; See, Letha-A (Lee) (2000) में त्वचा के रंगों का मनोवैज्ञानिक प्रभाव पर एक शोध कार्य किया, तथा अफरीकन तथा अमेरिकन समुदाय में इनका मनोवैज्ञानिक प्रभाव देखा, और यह पाया, कि अमेरिकन समुदाय में रंग विभेद के प्रति भेद किया जाता है तथा हल्की त्वचा के रंग कलर को महत्व दिया जाता है, अधिक गहरी त्वचा के 16 वर्ष के बालक श्वेत त्वचा को अधिक प्राथमिकता देते है, तथा त्वचा विभेद ब्लेक समुदाय में एक गंभीर समस्या है, जो कि व्यक्तियों को संवेगात्मक रूप से विचलित कर देते हैं।

Patel, - Harshada, Blades, - Mark, Andrade, Jackie (2001) में संज्ञानात्मक विकास पर रंगों के प्रभाव पर अध्ययन किया। जिसमें 7 वर्ष के 60 बच्चे तथा 10 वर्ष से 57 बच्चे शामिल किये गये, प्रदर्श विधि द्वारा उन्हें 16 वस्तुओं का अवलोकन कराया गया, जो कि 16 रंगो की थी जिसमें कुछ वस्तुएं तथा कुछ कपड़े थे। जिससे यह परिणाम प्राप्त हुए कि रंगों का याद रहना अवसर पर निर्भर करता है। तथा वस्तुओं की अपेक्षा कपड़ों की रंग स्मृति अपेक्षाकृत कम थी।

I Shihara, - Keiko (2001) ने जब रंग प्रसामिड परीक्षण पर अपराधियों के भावात्मक मूल्यों एवं एम.जे.पी. आई स्कोर के सम्बन्ध में देखने की चेष्टा की एवं 24 रंगों के टुकड़ों की पांच सतहों पर 15 फ्रेम बनाने के आधार देखते हुए यह पाया कि प्रयोज्यों द्वारा रंगों की बार–बार की जाने वाले चयन से उस रंग की संवेगात्मक मूल्य पद्धति के विश्लेषण से विदित हुआ, कि रंग चयन के आधार पर व्यक्ति की हाइपोकोनिडिया अवसाद विकृति अंतरमुक्ता एवं आवेगात्मक आदि

प्रवृत्तियां जानने में भी उपयोगी है, परन्तु आज्ञाकारिता निम्न उन्माद आशावादिता और सामाजिक अंतरमुक्ता प्रवृत्तियों मूल्यांकित करने में उपयोगी नहीं है, प्रयोज्यों द्वारा बनाया गया, प्रथम प्रारामिड व्यक्तित्व की विशेषताओं को दर्शाता है।

Saucier, Deborah-M, Elias,- Lorin-J, Nylen, - Kirk (2001) ने इस बात का अध्ययन करने के लिये कि क्या रंग विशिष्ट हे, एवं महिलाओं में रंग गति को नाम देने के प्रयोग किये और पाया कि जब रंगों के थक्के या धब्बों को तेज गति से महिला और पुरूषों के बीच प्रस्तुत किया जाता है, तो महिलायें पुरूषों की अपेक्षा रंगों को तेजगति से पहचानने व उनका नामकरण करती है। इसका कारण महिलायें के प्रत्यक्षीकरण नामकरण उवं छाटने में उनके दृश्य क्षेत्र की श्रेष्ठता को घोषित करता है, ये संभावना रंगों के नामकरण, रंगभेद आकार नामकरण एवं कलात्मक तीव्रता के अध्ययन में 44 छात्रों पर किये गये, पाया गया, कि महिलायें बड़ी तीव्र गति से रंग और आकारों का नाम पुरूषों की तुलना में श्रेष्ठता से बतलाती है।

Xin, - John-H, Lam, Chuen-Cheun, Luo,-M-Ronnier (2001) में रंग विभेदीकरण मापन हेतु पांच प्रकार के पैरामैट्रिक प्रभाव को देखने हेतु शोध किया गया, यह प्रयोग 6 स्तरों पर पूर्ण हआ, इसमें सैम्पिल को अलग करना, सैम्पिल का आकार तथा रंग की पृष्ठभूमि के द्वारा अध्ययन किया इसमें सूती रंगाई के 107 जोड़े लिये गये, जो कि पांच रंग जोड़ों के साथ लिये गये थे, अवलोकनाकर्ता द्वारा अवलोकन किये गये, इसमें कुल 10 अवलोकनकर्ता को पुर्नरावृत्ति की। रंग विभेद का औसत लगभग 5.0 **CIELAB** इकाई प्राप्त हुआ, रंग विभेद जानने के लिये ग्र सकेल विधि का उपयोग किया गया, परिणाम यह प्रदर्शित करते है, कि **CIELAB** रंग विभेद फार्मूला सबसे श्रेष्ठ सिद्ध हुआ, अन्य फार्मूला की अपेक्षा विभिन्न केन्द्रो से प्राप्त सेम्पल में 0 से 15 प्रतिशत पैरामेट्रिक प्रभाव में अंतर पाया गया, जो सर्वाधिक 42 प्रतिशत तथा 26 प्रतिशत था।

Hotze, - Bernadette-M (2002) ने रंग गत्यात्मकता की ऊर्जा निर्वाह धार्मिक रेखीय का एवं ध्रुवीयकरण के मध्य संबंध देखते हुए, यह देखने की चेष्टा

की कि क्या ऊर्जा का वर्तमान विचार चेतनता का एवं सृजनात्मकता का संबंध है, उनके खोज परिणाम में प्रकाशित्मकता कला विज्ञान के सैद्धान्तिक प्रतिदर्श को विस्तार दिया। हमारे अचेतन मन में हम सम्मोहित प्रत्यक्षीकरण एवं ध्रुवीय तनाव को रंग माध्यमों एवं धार्मिक ज्यानिल को सृजनात्मक क्रियाओं का उपयोग करते हुए अचेतन में प्रवेश कर सकते है। जागने पर हम उनमें अर्थ और विकल्प देते हुए, सृजन करते हुए तथा अपने तनाव से मुक्त होकर अपने जीवन में अच्छी लयबद्धता प्राप्त या खोज कर सकते हैं। प्रकाशात्मक कला मनोविज्ञान निश्चित रूप से दार्शनिक तौर पर मूल रूप सभ्यता को समाहित करती है, इस तरह से इनके अनुसार सृजनात्मक कार्य आंतरिक रूप से संशोधन शीलता रखते हैं। एवं रंग अगर शुद्ध ज्यामितीय आकारों के साथ प्रस्तुत किये जाये तो वे व्यक्ति में आंतरिक ध्रुवीय संरचना में चिकित्सीय परिवर्तन लाने में सक्षम है, क्योंकि जब हम अलगाव का प्रत्यक्षीकरण करते है, तभी ध्रुवीय तनाव तैयार होते है, अन्य का प्रत्यक्षीकरण का अनुभव हमें प्रकृति से और एक दूसरे से काटता है। यहां तक कि अपने स्वास्थ्य से संतुलन और स्वास्थ्य को पुनः प्राप्त करने के लिये इन विरोधाभासी संबंधों को मिश्रित होकर उन्हें मूलभत एकीकरता अवस्था में लाया जाने पर ही हम संतुलन और स्वास्थ्य पुनः प्राप्त कर सकते हैं। जहां रंग चक्र का सरंचनात्मक महत्व है, वही अन्तर्ज्ञान से प्राप्त पेटिंग विधि अह्म के प्रभाव को कम कर सकती है। वही सुप्रतिष्ठित ज्यामितीय व्यक्ति के स्वः संगठन में लय बद्धता लाता है, एवं ध्रुवीयता जीवन की महानतम तनाव से संबंधित है, इन चार तत्वों का व्यक्ति के अचेतनमन से सीधा संबंध होता है, रंग एवं ज्यामितीय न केवल पेंटर या रंगकम्मी के यथार्थ का विवरण देता है, वरन् साथ ही सहसृजनात्मकता रखते हुए परिवर्तनकारी इकाई के रूप में होता है, यह व्यक्ति को अपनी चेतना और यथार्थ के आत्मगत विचार को प्रभावित करते है। जिससे रचना धर्मो में अपनी चेतना और वस्तुगतता के प्रति अधिक संयोग हो उठता है। अगर व्यक्ति के आंतरिक ध्रुवीयता को अह्म को झुकाने एवं अचेतन को स्थिर क्रियाशीलता में विश्लेषित किया जाय, तो व्यक्ति की वैयक्तिक क्रियाओं को अपनी अचेतन अवस्था को व्यक्तिगत तोर पर परिवर्तित करने में सहायता की।

Patel, - Harshada, Blades, Mark, Andrade, - Jackie (2002) में संज्ञानात्मक विकास पर रंगों के प्रभाव पर अध्ययन किया, जिसमें 7 वर्ष के 60 बच्चे तथा 10 वर्ष के 57 बच्चे शामिल किये गये, प्रदर्श विधि द्वारा उन्हें 16 वस्तुओं का अवलोकन कराया गया जो कि 16 रंगों की थी, जिसमें कुछ वस्तुए तथा कुछ कपड़े थे। जिससे यह परिणाम प्राप्त हुए कि रंगों को याद रखना अवसर पर निर्भर करता है तथा वस्तुओं की अपेक्षा कपड़ों को रंग स्मृति अपेक्षाकृत कम थी।

Xin-John - H, Sijie, - Shao, Chung-Korris (2002) में मोडिलिंग पर रंग के प्रदर्शित होने पर अध्ययन किया। अध्ययन यह बताते है कि न्यूट्रल नेटवर्क रंग की सामान्य क्षमता अधिक स्पष्ट नहीं दिखाई दी।

KO, Natasa (2002) ने एक अध्ययन में पाया कि विचारों के लचीलेपन के आधार देखे क्योंकि विचारों के लचीलेपन वाले व्यक्ति द्वारा अपेक्षित काम के लचीले समाधान अपनाने का आधार उनके ध्यान नियंत्रण एवं उनके अच्छे आत्मसंयम पर निर्भर करता है, प्रयोज्यों में रंगों से संबंधित शब्दों को सहचर्य के रूप में उपयोग किया गया एवं 110 हाईस्कूल छात्रों पर प्रदत्त संकलित करते हुए, यह पाया कि व्यक्तियों की कार्यदक्षता को प्रभावित ध्यान और संवेगात्मक नियंत्रण से मद्द मिलती है। जबकि उच्च संवेगात्मक नियंत्रण शरीर के आधार का कार्य निष्पादन से कोई संबंध नहीं होता एवं पूर्वानुमान रचनाधर्म का आदि समाधान से संबंधित नहीं होता।

Jones, - Gregory-V; Stacey-Helen, Martin, Maryanne (2002) ने संवेगात्मक स्ट्रूप बाधा क्रिया की तीव्रता को खोजने के दरमियान, संवेगात्मक भटकाव के दरमियान, रंगों के नामकरण पर व्यक्ति की संवेगात्मक अवस्थाओं के प्रभाव को निरूपित किया, कुछ अतयाधुनिक अध्ययनों में भी यह प्रभाव द्रमिक हो। जाना पाया गया, जिसको उन्होंने संवेगात्मक विग्रता बाधा विरोधाभासी तीव्रता का नाम दिया।

UM, - Jinsub, Eum, - Kyoungbae, Lee, Joonwhoan (2002) ने संवगात्मक मूल्यांकन करने के लिये एडेपटिव पुसी सिस्टम तथा नूरल नेटवर्क के रंग नमूनों के माूडल तैयार किये ये दो प्रकार के संवेगात्मक मॉडल थे, जो कि शारीरिक आकृति को रंगों के नमूनों द्वारा संवेगात्मक आकृति में बदलते थे, जो कि शारीरिक आकृति को रंगों के नमूनों द्वारा संवेगात्मक आकृति में बदलते थे। शोध परिणाम यह स्पष्ट करते है, कि व्यक्ति के संवेगों या भागों के लिये भाषा से अधिक रंग नमूनें प्रभावशाली है।

Horiguchi, - Toshihiro; Ohta - Katsuya, Kaga, - Makiko; (2003) ने एक अध्ययन में रंगभेद कार्य में 6 महिला और 6 पुरूषों एवं 4 लड़कियों के बीच रंग भेद के दरमियान चुम्बकीय क्रियाशीलता के धरातल पर भेद देखा, उनके मेगनेटोस्फेलोग्राम निर्मित किये, एवं मस्तिष्कीय चुम्बकीय में बांये क्षेत्र में क्रियाशीलता उच्च जबकि दायें क्षेत्र में क्रियाशीलता निम्न पाई गई, जबकि छोटे आयु के प्रयोज्यों में यह एक्टीविटीज बिल्कुल उल्टी थी।

Colt, - Christopher; Mclntosh - Lyn, Greenway, - Philip (2003) ने व्यक्तित्व चारित्रिक गुणों पर रंग प्राथमिकता के प्रभाव का अध्ययन किया तथा इन्हें कुछ महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त हुए, अपने इस शोध कार्य में रंग प्राथमिकता का प्रत्यक्षेपण प्रभाव देखा तथा व्यक्तित्व कारकों तथा रंग प्राथमिकता का सार्थक संबंध ज्ञात हुआ, जो व्यक्तियों की अभिवृत्तियों के अनुसार विभिन्नता पाई गई, इस हेतु उत्तरदाताओं को रंग के जोड़े दिखाये गये, रंगों से अत्यधिक प्रभावित होने वाले कारकों में स्वीकार उचित को प्राथमिकता प्राप्त हुई।

Daminy, - Nathaniel - J; Luca. - Peter-W (2004) में रंग ऊर्जा एवं पर्यावरण का दृश्य पर्यावरण से महत्व जोड़ने का अध्ययन किया, इस अध्ययन में केटराहिन्स नामक बन्दरों की 4 प्रजातियों सारकोपिथेकस एस्केनिअस, कोलोवस गुरेजा, पान टरोगलोडायटस और पिलोकोलोबस वेडिस पर इनकी दृश्य पर्यावरण पद्धति और उनके द्वारा उपयोग में लाये जाने वाले फलों व पत्तों की भौतिक

रासायनिक गुण पद्धति के बीच सहसंबंध ज्ञात करने के लिये अध्ययन किये, सामूहिक तौर पर इन बन्दरों की खुराक भिन्न थी एवं वे भिन्न मात्राओं के फल और पत्तों को खाते थे, परन्तु खाद्यान्न का औसत रंग हरा, लाल एवं पीला, नीला संकेतक द्वारा प्रत्यक्षित किया जाता है जबकि पत्तों का चयन का आधार रंग था। बन्दर अधिकांश तौर पर उन पत्तों को अधिक खते देखे ये, जिनका रंग मूल हरा, लाल, वनस्पितपद उन पत्तों को जिनमें अच्छी पोषक पद्धति है। पर जिनसे संवेदना से हटना पड़ता है, पर जो पत्ते कोमल और उच्च प्रोटीनयुक्त होते हैं, जहां तक फलों का सवाल है, खाये जाने योग्य फल की खपत पर उनकी रंग पद्धति ना खाये जाने वाले फलों की रंग पद्धति में कोई सहसंबंध नहीं पाया गया मौसमों के हिसाब से बन्दरों के वायोमास में वृद्धि देखी गई और उसी हिसाब से उनमें रंगों के चयन की पद्धति क्रमशः विकसित हुई

Zirkel, - Sabrina (2004) ने जब इस बात का अध्ययन करना चाहा कि आप मेरे बारे में क्या सोचते है। जाति वैक्तिता एवं सहयोगियों के संबंध उपलब्धियों का काले और गौरे व्यक्तियों पर अध्ययन किया, तब पाया कि कई व्यक्ति ऐसी शालाओं का चयन करना पसंद करते हैं, जिनमें उनकी लक्ष्य उपलब्धि का मजा अधिक मिले, ऐसे छात्र जो रंगयुक्त थे, वे स्कूल में अलग थलग देखे जाते थे, पर उनका अलगाव उनके एकेडमिक शिक्षकीय कार्य रूचि के ऋणात्मक रूप से संबंधित पाया गया, गौर छात्रों में सामाजिक अलगाव और उनकी रूचि में कोई संबंध नहीं पाया गया इस अध्ययन का प्रमुख केन्द्रीय मुद्दा इस बात को विदित करना था कि क्या सामाजिक मौसम विभिन्न रंग वाले व्यक्तियों की उपलब्धियों को बढ़ावा देने व वादित करने में कोई भमिका अदा करता है।

Bimler, - David-L; Kirkland, Joh, Jameso, Kimberly-A (2004) में जब व्यक्ति ने रंग छिद्रों में भिन्नताओं का मापन किया, तो उनका उद्देश्य यह जानना था कि क्या रंग दृष्टि की धरातल पर लिंग भिन्नता होती है। प्रयोज्यों से जब रंगों के स्वरूप के बारे में निर्णय लिये गये एवं उनमें डी–15 रंग हीन करने के परीक्षण किये और देखा कि प्रत्येक प्रयोज्य की रंगों के प्रति संवेदनशीलता समित आयाम

बजन क्षेत्र में निर्णय भिन्न नजर आये, यही नहीं उन्होंने यह भी जानना चाहा, कि प्रयोज्य को अन्तह रंग असमान्यताओं जो प्रत्यक्षीकरण करने में किस प्रकार प्रत्येक केन्द्र योगदान देता है। जब तीन रंगों के प्रतयक्षीकरण युवकों और विश्वविद्यालय छात्रों पर प्रयोग किये गये, तो पुरूष छात्रों में लाल और हरे रंग के केन्द्र पर कम महत्व दिया एवं रंगों के हल्केपन पर ज्यादा महत्व दिया गया।

cPpk ,o 0;Ldk e j xk dh ikFkfedrk ¼2005½

व्यस्कों की भिन्न प्रजातियां नीले रंग को पसंद करते हैं। यह लगभग सार्वभौमिक प्राथमिकता है। क्या वास्तव में यह सही है या फिर बच्चों एवं बड़ों की प्राथमिकता में अंतर है। 2001 से पहले इस प्रश्न का कोई निश्चित उत्तर नहीं था। इस वर्ष में Mordla Jentel के शोध द्वारा ज्ञात हुआ कि रंगों की प्राथमिकता और संवेग में एक रिश्ता पाया जाता है। M.J. ने 3 से 4 वर्ष के बच्चों को भिन्न रंगों के Hard Board को उनकी रंगों के पसन्द के अनुसार शोधार्थी के पास लाने को कहा और बाद में उन्हें कुछ दुखी अवस्था के चेहरे एवं क्रोधावस्था के मुख एवं प्रसन्नता के मुखों को बनाने को कहा और उसी रंग को पसंद करने के लिये कहा जो कि उन संवेगों के अनुसर फिट बैठ रहे थे।

i;koj.kh; lrqyu fl)kUr ¼ekuo d jx ikFkfedrk d lnHk e½ –

K.B. Schloss, Stephen E. Palmer (2005) मानव व्यवहार में रंगों की प्राथमिकता एक महत्वपूर्ण अंग है। व्यक्तियों के बहुत सारे निर्णयों को नियमित रूप से रंग प्रभावित करते हैं। चाहे वो कपड़े खरीदे, उन्हें पहने, उन्हें सजायें, अपने घरों या दफ्तरों को सजायें, और चाहे किस तरह भी वो अपने व्यक्तिगत एवं व्यवसाय की डिजायन करें या नाम रखें।

रंगों की प्राथमिकता का निर्णय लेने की प्रक्रिया में अहम हिस्सा होने का एक कारण ये है कि मनुष्य द्वारा बनायी विभिन्न वस्तुयें रंगों से प्रभावित होती है, यद्यपि रंगों में स्वनिर्मित गुण होते हैं और यह व्यवहारिक रूप से वस्तु के गुणों को

प्रभावित नहीं करते हैं, ही कारण है कि व्यक्ति अपने कपड़ों, कारों Ipods, Carpet आदि जैसे वस्तुओं को अपने पसंदीदा रंगों के अनुसार संग्रहीत करता है।

Hulburt & Ling (2007) रंग प्राथमिकता में जैविक अवयवों की लैगिंग असमानता प्रयोग सिद्ध करते हैं कि स्त्री एवं पुरूष दोनों ही रंगों के संयोजन में से नीले रंग की प्राथमिकता देते हैं। जब रंगों के मिश्रण से रंगों के चयन की बारी आती है तो स्त्रीयां वो रंग पसंद करती है जो रंगों के Specterm में लाल रंग के नजदीक होते हैं। जहाँ उनके shades गुलाबी पाये जाते हैं।

Joc Hallock (2007) व्यक्ति की रंग प्राथमिकता एवं पसंदीदा रंगों में सम्बन्ध के अध्ययन के अनुसार स्त्रियों और पुरूषों की एक ही रंग को लेकर प्राथमिकता में विभिन्नता पाई जाती है। रोचक तथ्य ..... चुनिन्दा भागीदारों पर किये गये सर्वे के अनुसार कम पसन्द किये हुये रंग और सस्ते रंगों का चार्ट लगभग समान था।

Changizi et all. (2009) ने अपने अध्ययन में पाया कि त्वचा के रंगों के अनुसार व्यक्ति के मानसिक स्तर में बदलाव आता है। उन्होंने रोग सम्बन्धी शोध को ध्यान में रखते हुये माना कि हल्के हरे रंग को रोग उपचार और मनोवैज्ञानिक बीमारी को व शारीरिक क्षमता को ठीक करने के उपयोग में लाया जा सकता है।

Stephen and MC Keegan (2010) ने पाया कि लाला और पीला रंग न्याय के लिये उपयोग किया जाता है जबकि हरा व नीला रंग रोगों के उपचार के लिये उपयोग किया जाता है। इसके अलावा गुलाबी व नारंगी रंग हल्के मानसिक स्तर को सुधारने के लिये किया जाता है।

jx ikFkfedrk vuHko l fu/kkfjr gkrh gA

By EMILY SOHN - (Oct 1-2010) चाहे फूल के बारे में हो या स्वेटर के बारे में या फर्नीचर या Ipods के बारे में हम सभी जगह रंगों के चुनाव को लेकर निर्णय लतेते रहते हैं। यह हमारा अनुभव है कि जो रंग चुनते हैं वो एक नये

अध्ययन को जन्म देते हैं। लोग वही रंग पसंद करते हैं जो उन्हे अच्छा लगता है। जबकि कुछ लोग कुछ ही रंगों को क्यों पसंद करते है। वैज्ञानिक इस विषय के सम्बन्ध में क्रमिक विकास पर ध्यान देते हैं। मुख्य सिऋान्त है कि हम उएन रंगों को पसंद करते हैं जो उन चीजों से जुड़े हुये हों। स्वच्थ प्रसन्न एवं जावन ऊर्जा भरपूर होत है।

उदाहरण के लिये एक नीला और स्वच्छ आसमान शान्त मौसम को प्रदर्शित करता है। इस प्रकार यह सिद्ध हो जाता है कि क्यूं सभी संस्कृतियों में नीला रंग पसंद किया जाता है।

Ellis, Lee, Ficek, Christopher (2010) रंगों की प्रथमिकता की वैधता को जानने के लिये वर्तमान अध्ययन किया गया और लिंग के आधार पर रंगों की प्राथमिकता को परखा गया। नार्थ अमेरिकन विद्यार्थी की बड़ी संख्या के आधार पर एक प्रामाणिक लैगिंक अंतर पाया गया जिसमें मुख्यता महिलाओं की तुलना में पुरूषों ने नीले रंगों के shades को ज्यादा प्राथमिकता दी जबकि दूसरी तरफ महिलाओं ने दो रंगों (हरा एवं नीला) में समानुपात पाया गया। इसके अलावा Letrosexual. Homosexual & Bysexual लिंगों की रंग प्राथमिकता में कोई प्रथामिक अंतर नहीं पाया। दूसरे शब्दों में पुरूष और महिलाओं के Letro sexual, Homo sexual & By sexual रेगों की प्राथमिकता समान पायी गयी है। जैसा कि सामान्य महिला पुरूषों में पाया जाता है।

O. Connor (2011) रंगों का मनोविज्ञान – रंगो का मनोविज्ञान मानवीय व्यवहार को निर्धारण करने का विज्ञान है। उदाहरणों में व्यक्तिगत रंगों की प्राथमिकता की सूची और English Football खिलाड़ी की कमीजों के रंग ओर उनके द्वारा खेले गये मेच के परिणामों का अध्ययन शामिल है। जबकि रंग और वातावरणीय उद्दीपन में आपसी में गौण सम्बन्ध होता है जो कि एक बड़ी संख्या में कारकों द्वारा खुले रूप में प्रभावित किये जाते हैं।

0;fDrd lkp ij jxk dk iHkko

Alcaid J. et al. (2012) व्यैक्तिक सोच बास्तव में रंगों की प्राथमिकता से संधितनहीं है। जैसे कि खाने की प्राथमिकता न्यूनतम रूप से रंगों द्वारा प्रभावित होती है। खाने का रंग ही नहीं बल्कि इर्द गिर्द रखी भोजन सामग्री, और भोजन करने वाले की खाने के प्रति सोच भी प्रभावित करती है। रंगों की प्राथमिकता की सोच को समझने के बारे में Josef Albert's के रिसर्च के अनुसार रंग दूसरे को आकर्षित करते हैं। इसके अध्ययन में रंगों का Optical Illusion और Hues का समान दृष्टिगत होना भी पाया गया है।

jxk dh ikFkfedrk lkoHkkfed ugh gksrh gA

JEXP Psychol Gen 2012 Nov. 12 रंग प्राथमिकता की खोजन में सार्वभौकिता का दावा किया जाता है। यह तर्क दिया जाता रहा है कि कुछ रंगों को दूसरे रंगों के ऊपर सार्वभौमिक प्राथमिकता है। सार्वभौमिक लैगिंग असमानता और सार्वभौमिक प्राथमिकता की सोच को नियन्ति करती है। फिर भी आश्चर्यजनक रूप से यह पाया गया है कि विभिन्न सभ्यताओं की रंग प्राथमिकता पर तुलनात्मक अध्ययन कुछ कम देखने को मिलता है। व्यवसायिक समाज या समानुयातिक रूप से वैस्विक उपभोक्ता संस्कृति के प्रभाव से मुक्त है। हम रंग प्राथमिकता के मामले में बिट्रिश लोगों की हिम्बा लोगों से तुलना करते हैं। जो कि ग्रामीण नामीविया से लाते हैं। बिट्रिश और हिम्बा लोग रंग प्राथमिकता के मामले में कुछ विशेषतायें समान रखते है। बहुत से एक महत्वपूर्ण भविष्य वक्ता जो रंग के विषय जाने पहचाने नाम हैं। वे रंग प्राथमिकता में प्रष्ठभूमि और प्रेरक के बारे में समान राय नहीं रखते हैं।

Elliot and Mailr (2012) ने पाया कि कुछ रंगों को देखकर व्यक्ति के संवेगों में उद्दीपन आता है जबकि कुछ रंग धीरे धीरे कार्य करते है।। उनके शोध

में पाया गया कि जैविक कारणों से भी व्यक्ति के चयन पर रंगों के उद्दीपन का प्रभाव देखा जाता है। रंग जरूरी नहीं कि जो एक चीज पर खिल रहा है वहीं दूसरी चीज पर भी खिले। अतः रंग का अपना स्थान और चयन है। जैसे लाल फूल देखकर खुशी होती है, जबकि लाल चेहरा देखकर खुशी नहीं होती।

Malays J Meal Sci. (March 2013) Journal of Medical Science में शोधकर्ता द्वारा रंग के प्रभाव तथा स्मृति प्रदर्शन पर एक शोध कार्य हुआ। शोध परिणाम यह बताते हैं कि मानवीय संज्ञानात्मकता के अनेक मानसिक प्रक्रियायें सम्बन्धित है जो उच्च स्तर पर सह संबंधित होती है जैसे प्रत्यक्षीकरण, ध्यान, स्मृति तथा विचार इसमें समस्त प्रक्रिया में स्मृति का स्थान है, जो कि वातावरणीय सूचनाओं को याद रखने तथा जमा करने में सम्बन्ध में कार्य करती है। यह शोध कार्य रंग ध्यान तथा स्मृति प्रदर्शन के मध्य सम्बन्ध प्रदर्शित करता है कि रंग स्मृति प्रदर्शन को प्रभावित करते हैं, इनेके द्वारा ध्यान स्तर में वृद्धि होती है।

Mard - 15 2013 fyx d vulkj jxk dk dk;

रंग इस दुनिया में बहुत ही महत्वपूर्ण रोल अदा करते हैं। रंग सोच बदल सकते हैं एवं क्रिया व प्रतिक्रिया दोनों ही बदल सकते हैं। रंग आपकी सुकून पहुंचा सकते हैं, रक्तचाप बढ़ सकते हैं। आपकी भूख को घटा बढ़ा सकते हैं। जब रंगों को सही तरह उपयोग किया जाये तो मानसिक शक्ति को बचा सकते है।। शक्तिशाली संचार के रूप में रंगों से बढ़कर अन्य कोई विकल्प नहीं है। ट्रेफिर नियमों में सार्वजनिक रूप से लाल का अर्थ है रूक जाना, और हरे का अर्थ जाना है। इसी तरह किसी उत्पादन के लिये website के लिये या Besi Card के लिये Loge के लि रंग शक्तिशाली प्रतिक्रिया प्रदान करते हैं। इसका रंगों का अपना एक अलग अस्तित्व है।

Andrew J. Elliat (2015) वर्ष 2015 में इन्होंने रंग एवं मनोवैज्ञानिक कार्यकारिता पर एक शोध कार्य किया। परिणाम यह बताते हैं कि मनोवैज्ञज्ञनिक कार्यकारिता में रंग अपनी अहम भूमिका निभाते हैं क्योंकि ये व्यक्ति के दृष्टिकोण को प्रभावित करते हैं। रंग प्रत्यक्षीकरण में केवल प्रकाश, क्रोमा, तथा ह्यू का ही प्रभाव नहीं पड़ता बल्कि कितने अंतर से इन्हें देखा जा रहा है और इनका कोण क्या है। तथा प्रकाश का प्रकार व मात्रा कितनी है व पृष्ठभूमि में कौनसा रंग उपस्थिति है यह भी प्रदर्शित करते है।

●●●